International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

सम्राट अशोक का बौद्ध धर्म के विकास में योगदानः एक विश्लेषण

कान्ता
शोधार्थी, इतिहास विभाग
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय रोहतक

शोध–आलेख सार : वस्तुतः बौद्ध धर्म का संबध महात्मा बुद्ध से है जिनका जन्म ईसा से 563 वर्ष पूर्व लुम्बिनी वन में हुआ था। बुद्ध का बचपन का नाम सिद्धार्थ थ। वे एकान्तप्रिय तथा चिन्तनशील बालक के रूप में प्रसिद्ध थे। बचपन से ही विवाह बंधन में बंधने के बावजूद उन्होंने गृह त्याग किया और संसार की मोहमाया से दूर तपस्या में लीन हो गए। उनके गृह त्याग की क्रिया इतिहास में '**महाभिष्क्रमण**' के नाम से प्रसिद्ध है। सत्य और ज्ञान की प्राप्ति के लिए उन्होंने एक वट वृक्ष के नीचे कठोर तपस्या की और कालांतर में इसी स्थान पर 35 वर्ष की आयु में उन्हें बुद्धत्व (ज्ञान) प्राप्त हुआ। जिस वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ, वह बोधि वृक्ष कहलाया। ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्ध ने सर्वप्रथम सारनाथ में अपना प्रथम उपदेश दिया। यह घटना भारतीय इतिहास में धर्म–चक्र–प्रवर्तन के नाम से जानी जाती है। अपने जीवन के शेष समय को भी महात्मा बुद्ध ने धर्म के प्रचार में व्यतीत किया। उनके प्रयासों से ही बौद्ध धर्म भारत में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गया। इस परम्परा को सम्राट अशोक ने आगे बढाया।

मूलशब्दः बौद्ध धर्म, कलिंग युद्ध, प्रचारक, शिलालेख, बौद्ध सभाएं, बौद्ध विहार।

भूमिकाः विश्व इतिहास में सम्राट अशोक को बौद्ध धर्म का अनुयायी तथा प्रचारक होने का गौरव प्राप्त है। यह बात भी सत्य है कि बौद्ध धर्म अपनाने से पहले सम्राट अशोक एक निरंकुश शासक माना जाता था, जिसका प्रमाण कलिंग युद्ध के भयंकर परिणामों के रूप में मानव समाज के सामने आया। इस युद्ध ने अशोक को मानवीय दृष्टिकोण से सोचने और विचार करने के लिए विवश कर दिया। अब अशोक बौद्ध धर्म का अनुनायी बन गया और अपना शेष जीवन बौद्ध धर्म के प्रचार व प्रसार में लगा दिया। इसी कारण उन्हें इतिहास में अशोक महान् के रूप से पहचान प्राप्त हुई और वे लोकप्रिय शासक बन गए। इस संदर्भ में अनेक इतिहासकारों का मानना है कि अशोक के प्रयासों से ही बौद्ध धर्म भारत में लोकप्रिय

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

हुआ और विदेशों में भी इसका प्रभाव बढने लगा। अशोक के अभिलेख इस बात की पुष्टि करते हैं कि उनके मन में बौद्ध धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा थी।

साहित्य एवं धर्म का विकासः यद्यपि बौद्ध साहित्य में बौद्ध धर्म के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी उपलब्ध है। परन्तु इसमें त्रिपिटक अर्थात तीन बौद्ध ग्रन्थों में इस धर्म की विवेचना प्रस्तुत की गई है। ये तीन बौद्ध ग्रन्थ – सुतपिटक, विनयपिटक और अभिद्यम्मपिटक हैं। इनका निर्माण तीन बौद्ध संगीतियों के परिणामस्वरूप हुआ जो 5वीं शताब्दी ई.पूर्व में तीसरी शताब्दी ई.पूर्व के बीच संपन्न हुई। पहली संगीति राजगृह की सप्तकर्णी नामक गुफा में, दूसरी वैशाली तथा तीसरी अशोक के समय पाटलीपुत्र (वर्तमान पटना) में संपन्न हुई थी। वास्तव में त्रिपिटक साहित्य महात्मा बुद्ध के समकालीन ब्राह्मणों परिव्राजकों के जीवन और सिद्धान्तों के विवरण, गौतम बुद्ध के विषय में उनके मत और दोनों के पारस्परिक संबध, साधारण जनता के प्रचलित उद्योग और व्यवसाय, मनोरंजन के साधन, कला और विज्ञान, तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति और शासक, ब्राह्मणों के धार्मिक सिद्धान्त, जातिवाद, वर्णवाद, यज्ञवाद ग्राम, नगर, जनपद आदि के विवरण, कृषि और वाणिज्य, सामाजिक रीतियाँ, जीवन का नैतिक स्तर, स्त्रियां, दास–दासियों और कर्मकारों की अवस्था आदि की जानकारी उपलब्ध कराने में उपयोगी हैं।[1]

धर्म शिक्षा का विस्तारः यह बात सर्वविदित है कि बौद्ध धर्म की शिक्षा के प्रसार का सारा श्रेय बौद्ध भिक्षुओं को जाता है, वास्तव में बौद्ध भिक्षु ही शिक्षित थे और उनके पास इतना समय था कि वे दूसरों को शिक्षित बना सकते थे। ये लोग सुतन्त, धम्म और विनय का अध्ययन करते थे। चूंकि उन दिनों लिखित ग्रन्थ नहीं थे, अतः शिक्षा की पद्धति मौखिक थी। वस्तुतः शिक्षा के क्षेत्र में बौद्ध विहारों का विशेष योगदान रहा। विहारों में रहने वाले सभी भिक्षुओं के लिए पठ्न–पाठन आवश्यक था। अतः वहां पर सामूहिक रूप से पढाई होती थी। कालान्तर में उन विहारों में बौद्ध भिक्षुओं के अतिरिक्त अन्य लोग भी शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे। उस समय से किसी निश्चित स्थान पर सामूहिक शिक्षा देने की प्रणाली चल पड़ी। इस प्रकार सूत्रकालीन भारत में दो प्रकार की शिक्षा प्रणाली कार्य करती

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

थी। एक थी – ब्राह्मणों की, जिसे गुरूकुल शिक्षा प्रणाली कहते हैं और दूसरी बौद्ध भिक्षुओं की जो बौद्ध विहारों में होती थी। तक्षशिला इस समय का प्रमुख शिक्षण केन्द्र था।[2]

भारतीय इतिहास में इस बात के पर्याप्त प्रमाण है कि बौद्ध धर्म स्वीकार करने से पहले सम्राट अशोक ब्राह्मण धर्म में विश्वास रखता था। राजतंरगिणी के अनुसार वह सच्चा शिव भक्त था। वह मांस–मदिरा का सेवन करता था और शिकार खेलता था। उसका जीवन भोग–विलास का जीवन करना था। उसे युद्ध व शिकार बहुत प्रिय थे। उसकी सबसे भयंकर विजय कलिंग युद्ध की मानी जाती है। इसमें जो भयंकर नरसंहार हुआ, उसने अशोक के मानस–पटल पर गहरा प्रभाव डाला और वह बौद्ध धर्म का अनुयायी बन गया। इसके बाद उसने बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए यथासंभव प्रयास किए। यद्यपि कुछ विद्वान इतिहासकार मानते हैं कि अशोक ने कलिंग युद्ध के नौवें वर्ष बौद्ध धर्म ग्रहण किया था। परन्तु डा. भण्डारकर इस मत से असहमत हैं। उनका मानना है कि अशोक कलिंग युद्ध की विजय के तुरन्त बाद ही बौद्ध धर्म का उपासक बन गया था। कुछ इतिहासकार मानते है कि अशोक पर किसी बौद्ध प्रचारक का प्रभाव पड़ा था और वह उसका अनुयायी बन गया था। उनके भाब्रू अभिलेख से इस बात की पुष्टि होती है कि वह महात्मा बुद्ध के समय से ही बौद्ध धर्म का उपासक था। अन्य शिलालेख भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि उसने महात्मा बुद्ध द्वारा निर्मित कई धार्मिक तीर्थ स्थानों की यात्राऐं की थी। यद्यपि अशोक ने बौद्ध धर्म कब ग्रहण किया था, इस बारे में इतिहासकारों में मतभेद अवश्य हैं।[3]

अशोक द्वारा प्रचारः अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए निम्नलिखित कार्य किए:–[4]

- उन्होंने बौद्ध तीर्थ स्थलों की यात्राऐं की। इनमें लुम्बिनी वन, कपिलवस्तु, गया, बोधि वृक्ष, सारनाथ, श्रावस्ती तथा कुशीनगर की यात्राऐं शामिल हैं। इस बात के प्रमाण उनके '***रूमिनदेई स्तम्भ लेख*** से मिलते हैं।
- उन्होंने बौद्ध धर्म की विसंगतियों व मतभेदों को दूर करने के लिए तीसरी बौद्ध संगीति का अयोजन 251 ई. पूर्व में पाटलिपुत्र नामक जगह पर करवाया। इस

समय 'कथावस्तु' नामक बौद्ध ग्रंथ की रचना हुई, जिसमें बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों का संकलन किया गया।

- उन्होंने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए 'धर्म महामात्र' नामक अधिकारियों की नियुक्ति की। इससे बौद्ध धर्म अपने विकास के मार्ग पर काफी आगे बढ गयां
- उन्होंने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए बौद्ध विहार तथा स्तपों का निर्माण करवाया। महावंश के अनुसार अशोक ने 84 हजार बौद्ध स्तूपों का निर्माण करवाया था। सांची का स्तूप आज भी इस बात को प्रमाणित करता है। ये विहार और स्तूप बौद्ध धर्म की शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे।
- अशोक ने बौद्ध धर्म का प्रचार करने के उद्देश्य से धर्म प्रचारकों को विदेशों में भेजा। इनमें महारक्षित, महादेव, सोन, उत्तरा, महेन्द्र तथा संघमित्रा प्रमुख हैं। इनके प्रयासों से बौद्ध धर्म एशिया का प्रसिद्ध धर्म बन गया और विदेशी जमीन पर धीरे–धीरे इस धर्म का फैलाव इतना बढ गया, जिसके प्रमाण आज भी विद्यमान हैं।

अशोक का धर्मः सम्राट अशोक ने अपनी जनता के नैतिक व आध्यात्मिक उत्थान के लिए कुछ नैतिक सिद्धांतों का प्रचार किया। ये नैतिक सिद्धान्त ही अशोक का धर्म हैं। अशोक का व्यक्तिगत धर्म बौद्ध था। शिलालेख–12 में कहा गया है कि बौद्ध धर्म ही सभी धर्मों का सार है। कलिंग की विजय के बाद उन्होंने धर्म विजय की नीति अपनाई और अपने धर्म को अष्टांग मार्ग पा आधारित किया। बौद्ध धर्म के अष्टांग मार्ग में शामिल हैं – सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वचन, सम्यक कर्म, सम्यक जीवन, सम्यक विचार, सम्यक स्मृति तथा सम्यक समाधि। बौद्ध धर्म के अनुसार जो इन आठ मार्गों का अनुसरण करेगा, वह अन्त में निर्वाण प्राप्त करेगा, चाहे उसका जन्म किसी भी कुल में हुआ हो।[5] अन्ततः अशोक के धर्म के प्रमुख सिद्धान्त इसी अष्टांग मार्ग पर आधारित हैं। उन्होंने एक ऐसे सार्वभौमिक धर्म की नींव रखी जो आज भी प्रासांगिक है। उनके प्रमुख सिद्धान्त है [6]:–

- हमें बड़ों का सम्मान व उनका आदर करना चाहिए। बच्चों को अपने माता–पिता तथा गुरूजनों के प्रति आदर की भावना रखनी चाहिए। इसी प्रकार बड़ों को भी छोटों के प्रति स्नेह की भावना रखनी चाहिए। अशोक ने शिलालेख 11 तथा 12 में दासों और नौकरों के प्रति भी अच्छा व्यवहार करने का निर्देश दिया है।

- व्यक्ति को हमेशा सत्य बोलना चाहिए और झूठ से घृणा करनी चाहिए।
- मनुष्य को पाप रहित व निष्काम जीवन व्यतीत करना चाहिए।
- प्रत्येक मनुष्य को आत्म–परीक्षण करना चाहिए ताकि स्वयं की कमियों का पता चलने से उन्हें दूर किया जा सके।
- हमें जीवन में हिंसा का परित्याग तथा अहिंसा का पालन करना चाहिए।
- मनुष्य को विद्वानों, ऋषियों तथा निर्धन व्यक्तियों को हमेशा दान देना चाहिए।
- अशोक ने अपने शिलालेख संख्या 9 में झूठे आडम्बरों से दूर रहकर सच्चे रीति रिवाजों के पालन की शिक्षा दी हैं।
- मनुष्य को सहिष्णुता के अनुसार सभी धर्मों का आदर करना चाहिए।
- मनुष्य को परलोक सुधार की दिशा में अथक व व्यवहारिक प्रयास करने चाहिंए ताकि मृत्यु के बाद उसे स्वर्ग प्राप्त हो सके।

धर्म का महत्वः वस्तुतः अशोक सम्राट भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले प्रथम सम्राट हैं, जिन्होंने अपनी जनता को परलोक तक का सफर करते समय सावधान रहने की शिक्षा दी ताकि उनकी प्रजा इस संसार के तमाम कष्टों से दूर रहकर सुखी जीवन के अनुसार अहिंसा के पालन के द्वारा धर्म के मार्ग पर चलती रहे। स्वयं अशोक ने जो धर्म नीति अपनाई थी, उसी मार्ग पर चलने की अपेक्षा उन्होंने जनता से भी की थी। यही कारण है कि अशोक ने बौद्ध धर्म की शिक्षाऐं स्वयं तो ग्रहण की ही साथ में प्रजा से भी अनुसरण करवाया ताकि उनके अंदर एक नैतिक भावना का विकास हो, उनके प्रभाव में आकर उनके दरबार के सभी अधिकारी – कर्मचारी बौद्ध धर्म के अनुयायी बन गए। इसी के प्रभाव से प्रजा ने एक सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर अपना जीवन व्यतीत किया ताकि उनका परलोक परेशानी से दूर रखकर उन्हें सात्विक जीवने जीने में मददगार हो और वे स्वर्ग के मार्ग की तरफ अग्रसर हों। उनके प्रयासों से ही जनता में एकता व भाईचारे की भावना पैदा हुई और सभी धर्मों के लोग मिलकर रहने लगे। अशोक स्वयं भी एक अनुशासन प्रिय शासक था। इसी बात की अपेक्षा वह अपनी जनता से भी रखता था।

सारांशः समस्त वाद–विवाद के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि अशोक भारतीय इतिहास के प्रथम लोकप्रिय शासक थे। उन्होंने धर्म का जो मार्ग स्वयं अपनाया,

वह उनकी प्रजा के लिए अनुकरणीय था। अशोक द्वारा निर्मित शिलालेख आज भी इस बात के प्रमाण हैं कि जैन श्रुति में जो स्थान राजा सम्प्रति का है, बौद्ध धर्म में वही स्थान सम्राट अशोक का है। अशोक द्वारा निर्मित शिलालेख हमें इस बात की जानकारी उपलब्ध करवाते हैं कि अशोक ने बौद्ध धर्म को विदेशी धरती पर भी फैलाया और भारत के गौरव और सम्मान में भी वृद्धि की। आज भी बौद्ध धर्म विश्व के कई देशों में लोकप्रिय है। इसका श्रेय अशोक द्वारा किए गए प्रयासों को जाता है। वास्तव में सम्राट अशोक के धर्म की शिक्षाएं आज भी प्रासंगिक हैं और शाश्वत् महत्व की हैं। यदि अशोक की शिक्षाओं का अनुसरण कर लिया जाए तो विश्व में व्याप्त तनाव, हिंसा, आतंकवाद, नक्सलवाद, माओवाद आदि का समाधान शीघ्र हो सकता है और पृथ्वी पर ही स्वर्ग की स्थापना की जा सकती है।

सन्दर्भ सूची:

1. नागोरी, एस॰ एल॰ एवं नागोरी, कान्ता, ***प्राचीन भारत का सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक इतिहास***, राज पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, 2007, पृष्ठ. 104–05.
2. ***वही***, पृष्ठ. 106–08.
3. झा, डी॰ एन॰, ***प्राचीन भारत : एक रूपरेखा***, मनोहर पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2005, पृष्ठ. 42.
4. गौरव, प्रशान्त, **प्राचीन भारत,** राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृष्ठ–174.
5. पाण्डेय, मिथिला शरण, ***प्राचीन भारत की सामाजिक संस्थाएं***, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001, पृष्ठ–64.
6. नागोरी, एस॰ एल॰ एवं नागोरी, कान्ता, **पूर्वोक्त**, पृष्ठ. 109–10.